अतुल मोहन प्रसाद

जन्म- 07 जुलाई 1951, बक्सर (बिहार)
पिताश्री - डॉ0 शारदा प्रसाद (डुमरी निवासी)
माताश्री - स्व. सुमित्रा देवी
प्रकाशित कृतियाँ - ठहरा हुआ जल : उठती हुई लहरें (1985) लघुकथा संकलन,पाली का आदमी (1986) हिन्दी कहानी-संग्रह, तरकश का आखिरी तीर (1990) लघुकथा संकलन, चुभन (2005) लघुकथा संकलन,अन्हार के साँच (भोजपुरी कहानी-संग्रह)।
विशेष : आकशवाणी से रचनाएँ प्रसारित एवं अनेक रचनाएँ पुरस्कृत, प्रदर्शित तथा अन्य भाषाओं में अनुदित भी।
सम्मान - अखिल भारतीय प्रगतिशील लघुकथा मंच से 1998 में सम्मानित। सम्मति

" कामरेड का सांच"

"एह भाग्यवान सुनतारू।'' - कामरोड रमन तेज आवाज में कहलन।

"काह ?'' -मेहरारू भीतर से बाहर आवत बोललीं । ।

"चुनाव के घोषणा हो गइल बा । सोचत रही, एक हाली राजधानी घूम अइती ।''

'टिकट-ओकट के चक्कर बा का ?'' -मेहरारू जानल चहली ।

'टिकट ले के का करब ? ऊहो ए हाल में जब लोकसभा आजकल के ठीकेदार के बनावल पुल के तरह एकही बाढ़ झेल नइखे पावत आ बिखर जात बा । जतना चुनाव लड़े में खर्च बा ओतना लवटे के कवनो उम्मीद दिखाई नइखे पड़त । पेंशन के बात त दूर रहल । ऐसे त अच्छा ई बा कि दूसरे के लड़ाव आ कुछ लाभ भी कमा ल ।'

"तब हम का करी ?" -मेहरारू पूछली ।

"कुछ ना, तू का करबू ? चुनाव आ गइल त पार्टी के कुछ चन्दा देबे के नू पड़ी । हम एह इलाका के पुरान कामरेड बानी आ मुखिया भी ।''

"त चन्दादेबे खातिर राजधानी का जाइब ? अरे नेता लोग त अइबे करी । एहिजे दे देब । चुनावे त अइसन मोका बा कि नेताजी लोग गाँव में आवेलन जा ।''

"ओहिजा जाके देला प एगो अलगे नू प्रभाव पड़ेला । समझलू ?"

"हम सोझबक मेहरारू तोहन लोग के राजनीति के दांव-पेंच का समझत बानी ।''

"अइसन कर, हमार घुटना से नीचे वाला खादी के कुरता आ पैजामा ले आव । लोहा के आलमारी में जवन लाकर बा ओमे काल्ह के ले आइल बैंक के नोट बा । पचास वाला एगो पाकिट लेत अइह । जल्दी कर अबे दसबजिया ट्रेन मिल जाई ।"

कामरेड रमन ताबड़तोड़ तइयार होके घर से निकलते रहन कि दूर से धूर उड़ावत जीप आवत नजर आइल जवना पर उनका पार्टी के झंडा भी लहरात रहे । अब ऊ अपना दलानी में ही खाड़ होके जीप के आवे के इन्तजार करे लगलन । जीप उनका दुआरी के पास आके रूक गइल । जीप से उनका पार्टी के अध्यक्ष कामरेड अनिल दा, जिला अध्यक्ष कामरेड सूरजभान आ उनकर क्षेत्र के भावी उम्मीदवार कामरेड अलख नारायण बाहर अइलन ।

"केने के तइयारी बा कामरेड रमन ?' - प्रान्तीय अध्यक्ष कामरेड अनिल दा पूछलन ।

"अबे रउरे किहाँ जाये के तइयारी कइले रही । हमार बड़ भग कि रउवा सब से एहिजे भेंट हो गइल । सोचले रहीं.....''

"गाँव-जवार के का हाल बा ? हमनी के तनी से चूक जइती जा त मुखिया जी से भेंटे ना होइत ।" - कामरेड रमन के बीच में ही टोकत भावी उम्मीदवार कामरेड अलख नारायण दखल देत पूछलन ।

"एह बेर बहुत बढ़िया स्कोप बा । मंडल के प्रभाव मंदिर से ढेर बा । सामाजिक न्याय से ढेर लोग प्रभावित बा ।'' - मुखिया जी कहलन - रउवा सब बइठी ना । -"आइल लोगन से चिरौरी भी कइलन । दलान में लागल कुर्सी पर सब बइठ गइल।

"का लेब ? गरम की ठंढा ?'

"दूनो । गरमी बहुत बा एह से ठंढा पहिले ।'

"एह बेर चुनाव के अजबे सरगर्मी बा - कुछ समझ में नइखे आवत । हर बार चुनाव भी महंगा हो जाते बा ।'' राज्य के अध्यक्ष कामरेड अनिल दा बात के शुरूआत करत कहलन - ''मुखिया जी हमनी के रउवा किहाँ एह से आइल बानी जा कि पार्टी के कोष में चुनाव खातिर रउवा से कुछ चन्दा लिहल जाव ।''

"सरकार के जवने हुकुम । बन्दा त हाजिर बा । आज त हम राजधानी जाते रहनी हाँ..... ।''

"ऊ त रउवा अपना काम खातिर जात होखब ।''

"ना चुनाव के घोषणा के बाद हम सोचले रही कि पार्टी के चन्दा देबे के बा एही खातिर राजधानी जात रही ।''

"अरे भाई । रउरा लेखा कर्मठ कामरेड के चलते त पार्टी टिकल बिया ।'' - जिला के अध्यक्ष कामरेड सूरजभान सकुचइले कहलन ।

"चली, तब राजधानी घूम आई ।' - भावी उम्मीदवार अलख नारायण बोललन ।

"ना । अब त रउवा सब आइए गइल बानी तब गइला से का लाभ ? फेर कबो कवनो काम होई त आइब ।'' - आपन वजन बढ़ावत मुखियाजी हाथ जोड़ देलन।

"ठीक बा । रउवा चन्दा देके हमनी के बिदा करी । चुनाव के समये बा । कई जगह जाये के बा ।'' - कामरेड अनिल दा कहलन ।

"कतना देबे के बा ?

"'रउरा जइसन कर्मठ कामरेड से हमनी के दू हजार के आशा कइले बानी जा ।''

"अनिल दा। दू हजार त हम राउर इच्छा के अनुसार देबे करब । कामरेड सूरजभान जी पहिला बेर हमरा दुआर पर आइल बानी एह से उहाँ के सम्मान खातिर भी अपना ओर से दू हजार पार्टी के दिहल चाहब । भावी उम्मीदवार अलख नारायण जी के दु:ख न बुझाय एह से उहाँ के चुनाव कोष में एक हजार रूपया देबे के मन बा ।'' – ई कहत कामरेड रमन पाँच हजार के एगो पाकिट अनिल दा के ओर बढ़ा देलन। तीनो कामरेड एक दूसरा के चिहात मुँह देखे लागल - मुखियाजी से कम काहे मंगा गइल?''

"ढेर-ढेर धन्यवाद मुखियाजी । वास्तव में रउवा असली कामरेड बानी। कवनो काम में रउवा कबो जरूरत बुझाय तब रउवा कबो राजधानी आ जाइब । हमनी के सेवा करे के मोका देब ।'' - कहत अनिल दा जीप में सवार हो गइलन । ।

** ** **

"अनिल दा बानी ?'' - राजधानी के पब्लिक टेलिफोन बूथ से मुखिया रमन जी पूछलन ।

"बानी । अपने के के बोलत बानी ?'

"हम मुखिया कामरेड रमन बोलत बानी । रउवा फोन अनिल दा के दी ।"

"हम अनिल दा बोलत बानी । कइसन बानी मुखिया जी ?'' रउरा क्षेत्र के का हालचाल बा ?''

"हम ठीक बानी । क्षेत्र के भी हाल चाल ठीक बा ।''

"कही कइसे इयाद कइनी ह मुखियाजी ?"

"बात ईबा अनिल दा कि हम बुरी तरह से फस गइल बानी। अब रउवे उबार सकत बानी ।''

"बात तनी खुलासा करी चाहे आफिस में आ सकत बानी त आ जाई अबे हम एहिजा आधा घंटा तक रहब ।''

"हम आपन गाँव वाला मकान बनावत बानी.....''

"केहू से झगड़ा होगइल बा का ?"

"ना अनिल दा । रउवा त पूरा बात कबो सुनब ना बीचे में टोक देब । मकान के काम एक चौथाई हो गइल बा आ सिमेन्ट खतम हो गइल । मिलते नइखे । दू ट्रक सिमेन्ट के व्यवस्था कर दी ।'' - चिरौरी करत कामरेड रमन कहलन ।

"दू ट्रक सिमेन्ट का करब ? सिनेमो हॉल बनावावत बानी बा ?

"अरे एक डेढ़ ट्रक त लागीए जाई । कुछ पड़ल रही त गाँव वालन के काम आई । मुखिया भइला के कारण सब हमरे पास चल आवेला आ फेनु वोट भी त लेबे के बा ।''

"ठीक बा । ठीक बा !! अबे हम चौधरी सिमेन्ट एजेन्सी के फोन कर देत बानी । रउवा ओहिजा से सिमेन्ट ले लेब ।''

'बहुत ढेर शुक्रिया अनिल दा ।''

"अरे । शुक्रिया के का जरूरत बा । रउवा जइसन सांच कामरेड खातिर त कुछुओ कइल जा सकत बा । ई त सिमेन्टे बा ।''

"ठीक बा । हम सिमेन्ट जा के ले लेब । आज त हम जल्दी में बानी । फेनु कबो आइब त भेट करब ।' - कहत कामरेड रमन रिसीवर रख देलन ।

दूसरका दिन मुखियाजी दू ट्रक सिमेन्ट लेके घर पहुँचलन त भाग्यवान दुआरी प भेंटा गइली ।।

"ओह दिन त राजधानी ना जा सकल रही चन्दा देबे । चन्दा लेबे वाला लोग खुद पहुँच गइल रहे । आज चन्दा लेबे वाला लोगन से चन्दा के दाम सूदे समेत ले के आवत बानी । चुनाव तक पाँच के पच्चीस त एह कामरेड लोगन से वसूल करिये लेबे के बा।" - कामरेड रमन आपन मन के साँच उगिलत कहलन ।

_____ (कहानी संग्रह "अन्हार के साँच" से, प्रकाशित : भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, जून, 1992)